१००. अखण्डता सार्वभौमता ही मानव परम्परा है

१९-०९-२०१३

अखण्ड समाज ही मानव परम्परा है, बाकी सब समुदाय परम्परा है | अभी तक का किया गया का मूल्याँकन समुदाय परम्परा के रूप में ही होता है | हर परिवार के सीमा में एक संविधान बना है | जितने भी परिवार जीते हैं, धरती पर ही जीते हैं | जितने धरती में जीते हैं, उतने जगह को उन्हीं का स्वत्व माना जाता है: जबकि धरती किसी मनुष्य से बना नहीं रहता है | धरती में समाई हुयी खनिज मानव कृत नहीं है | धरती पर मानव का अधिकार होना ही अनर्थ का कारण हुआ | श्रम का अधिकार होता है, धरती का अधिकार नहीं होता | यह सटीक देखने पर पता लगता है | विकल्प विधि से अध्ययन करने पर पता लगता है | अनुसंधान विधि से पता लगता है | यह इस ढंग से तैयार होता है, मानव अभी तक न्याय क्यों नहीं कर पाया? धरती पर १०० से अधिक देश बना है | हर देश में एक संविधान है | हर संविधान के पीछे एक सुप्रीम कोर्ट है | सुप्रीम कोर्ट में कई विद्वान्, संविधानविद बैठे रहते हैं | ऐसा होते हुए अभी तक न्याय का पता नहीं लगा | इस प्रकार न्याय का पता न लगना मानव का कमजोरी है कि दूसरे का कमजोरी है? मतलब जीवों का कमजोरी है कि मानव का कमजोरी है? इस पर सोचने से पता लगता है, मानव का ही कमजोरी है | अध्ययन करने वाला इकाई मानव ही है |

कोई जीव, जानवर, मक्खी, बाघ, भालू, बंदर, गाय अध्ययन नहीं करते | अध्ययन करने वाला केवल मानव है | अनुमानात्मक अध्ययन को आदिकाल से किया है, जिसको साहित्य माना गया विशेषकर | इसी में कुछ भाग को दर्शन, विचार भी माना है | उपदेश भक्कम है | उपदेशों को साहित्य माना गया है | कविता माना गया है | ये सब मानव का दिया हुआ नाम है | इस क्रम में मानवीयता का पता नहीं लगता | इसीलिये मुझे अनुसंधान करना पड़ा | भौतिक विचार, आदर्श विचार दोनों का विकल्प रूप में अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन रूप में मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद को प्रस्तुत किया जिसमें मानव का अध्ययन होना सम्भव हुआ | मानव का अध्ययन मानवीयता की अपेक्षा में ही होता है | मानवीयता, देव मानवीयता, दिव्य मानवीयता अविभाज्य होना देखा गया है | यह अनुसंधान विधि से पता लगा | इसे अध्ययन विधि से बोधगम्य बनाया गया है | अनुसंधान व्यक्तिवादी होता है | एक व्यक्ति अनुसंधान करता है, अनेक अध्ययन करते हैं | इस कार्य के लिए अनुसंधान अथवा अध्ययन के लिए केवल मानव ही पहचानने में आता है | मानव का बनावट प्राकृतिक है | मानव का बनाया हुआ नहीं है | मानव परम्परा को बनाता है | प्राकृतिक रूप में व्यवस्था है | व्यवस्था में जीना ही त्व का मतलब है |

मानवत्व ही मानव का व्यवस्था का आधार है | मानव सदियों से इसी धरती पर रहते हुए, मानवत्व को अध्ययन, अनुसंधान नहीं कर पाया, इसी क्रम में अर्थात मानव परम्परा में ही सैंकड़ों, हजारों अनुसंधानकर्ता जन्मा है | मानवीयता के रूप में अनुसंधान हुआ नहीं | यही रिक्तता मेरे लिए परेशानी का कारण हुआ | इसी क्रम में मैं अनुसंधान किया | हमें ये सब कही हुई बातें पता लगा, आगे जो कह रहे हैं उसका भी पता लगा | इसी क्रम में हम इस निष्कर्ष पर आये कि मानव, मानवीयता के बिना समुदाय ही है | समुदाय अपनी श्रेष्ठता को बताने में प्रसिद्ध है | अपने संविधान को मानने में प्रतिबद्ध हैं | इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुये विकल्प को सोचा; अनुसंधान विधि से सोचने पर पता चला, मानवत्व ही मानव का प्रमाण, आधार है | मानव होने का प्रभाव, मानव रहने का प्रमाण, मानव परम्परा का प्रमाण ही मानव का स्वत्व है | अभी तक किया हुआ, सोचा गया जिसका फल परिणाम सम्भव हो गया है-उसे आंकलित करने से पता चलता है कि ज्ञान ही मानव का स्वत्व है | मानव का

ज्ञान, मानवत्व ही है | यह पता चला तभी यह विकल्प रूप देने का विचार हुआ | विचार के अनुसार विकल्प को प्रस्तुत किया | इसमें कुछ लोग दिलचस्पी दिखाए; फलस्वरूप विकल्प को विस्तार रूप में देने का मन हुआ | इसी क्रम में ये सब निबंधों को लिखने का प्रयास हुआ | लेख के रूप में निबंधों को प्रस्तुत किया | अभी यह २८ वां चल रहा है | आगे की संख्या बना दी है | मानवीयता का धारक, वाहक, प्रस्तुतकर्ता भी, अध्ययनकर्ता भी मानव है, प्रमाणकर्ता भी मानव है | मानव ही देवत्व, दिव्यत्व के रूप में प्रकाशित होता है | प्रकाशकर्ता भी मानव ही है | इस विधि से मानव का जिम्मेदारी पता लगता है | मानव ही मानवत्व के द्वारा परम्परा बनाता है | ऐसा परम्परा ही अर्थात मानवीयतापूर्ण परम्परा ही अविभाज्य रूप में तीनों प्रमाण, प्रमाणित हो पाते हैं | सार्वभौम व्यवस्था के रूप में दिव्य मानव चेतना, व्यवहार रूप में मानव चेतना प्रमाणित होता है | ये तीनों प्रमाण अविभाज्य हैं | इसी लिए मानव को अविभाज्य कहा है | मानवीयता विधि से मानवीयता ही विकसित होकर मानव का प्रतिष्ठा बनता है | मानव प्रतिष्ठा ही मानव परम्परा का आधार है | अन्यथा समुदाय परम्परा है |

समुदाय परम्परा ही एक दूसरे से विरोधाभासी होना प्रमाणित है | विरोध विधि से अखण्डता बनता नहीं | हर संविधान में कहा गया है- अखण्डता, सार्वभौमता | इसका मतलब समुदाय परम्परा में होते हुये भी श्रेष्ठता की कल्पना बना हुआ है | श्रेष्ठता की कल्पना विधि से ही अनुसंधान हुआ | अनुसंधान विधि से पता चला, समुदाय परम्परा अलग चीज है | अखण्ड समाज अलग चीज है | अलग चीज होने का आधार ज्ञान है | भौतिक क्रिया से सार्वभौमता को पाना सम्भव नहीं हुआ | ज्ञान से ही पाया जा सकता है | ज्ञान को ही समझदारी नाम दिया है | समझदारी पूर्ण है | ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूरा होता है | इस क्रम में मानवत्व ही आधार है | मानवत्व ही मानव चेतना है | चेतना ही तीनों प्रमाण है | व्यवहार प्रमाण, विचार प्रमाण, अनुभव प्रमाण | मानवत्व के साथ जीने की विधि में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था होना देखा है, सार्थक होना देखा गया है | उसी उद्देश्य से विकल्प को प्रस्तुत किया है | मानव जात समझदार हो सकता है | समय भले लगे | मानव जात को ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में पहचाना | क्रम से अध्ययनपूर्वक ज्ञानी सभी मानव होने की सम्भावना हमने देखा, तब मानव के लिए इस वस्तु को अर्पण किया | अध्ययन की अपेक्षा बना हुआ है |

ये कब तक पूरा होगा, इसको हम नहीं कह सकते | मानव जब अपनाएगा, तभी हो जाएगा | यह कुछ समुदाय में अध्ययन की वस्तु है, यह स्वीकार हुआ है | हमारे अनुसार अध्ययन समझ की वस्तु है, समझ प्रमाण की वस्तु है, प्रमाण परम्परा की वस्तु है | परम्परा मानवीयता के अर्थ में है | मानवीयता को छोड़ करके मानव का परम्परा समुदाय ही होता है | समुदाय को नकार कर समुदाय जिस जगह में रहता है, उस जगह का नाम दिया है सभी संविधान में | इसी आधार पर अर्थात विकल्प अध्ययन के आधार पर अखण्ड समाज को हम पा सकते हैं | दूसरा विधि से अखण्ड समाज नहीं पाएंगे | मुख प्रीति वचन खूब हो सकता है, हुआ भी | मुख प्रीति वचन से कोई परम्परा बनता नहीं | सौजन्यता की भाषा कहलाता है | अभी तक सौजन्यता की भाषा में पहुँच गये हैं | समझ का अपेक्षा बना रहा | सौजन्यता में सहजता का अपेक्षा बनता है | सहजता को परिशीलन करने पर सत्य, समाधान, न्याय प्रमाणित होता है | न्याय, समाधानपूर्वक होता है |

सत्य को समझा हूँ इसका प्रमाण, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना को समझा हूँ | मानव चेतना ही आचरण का आधार है | मानव चेतना को समझने के लिएमानव का अपेक्षा बना है | दूसरा भाषा में अधिकांश मानव में मानवीयता को समझने का अपेक्षा है अथवा न्यूनतम है, कुछ भी कहलाये, अपेक्षा तो बना है | अपेक्षा बनने से यह पता लगता है | दूसरा विधि से अपेक्षा को समझने से अपेक्षा की पूर्ति हेतु प्रयास होता है | इसी क्रम में यह अनुसंधान तैयार हुआ | अनुसंधान विधि से

मानव चेतना, विकसित चेतना के रूप में होना समझ में आता है | अभी तक जीव चेतना में जीता हुआ मानव जीवों से अच्छा जीने के प्रयास में सफल हुआ | इसका प्रमाण यही है- आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन हम पा गये | हम मानव पा गये | इसको जीव चेतना से भिन्न माना जा सकता है | जीने के क्रम में जीव चेतना, बोलने के क्रम में जीव चेतना से अधिक बताना बन गया है | हर देश अपना संविधान में सुख, शांतिपूर्वक जीने के लिए संविधानों को लिखा है | संविधान के पक्ष में ही सभी पुण्य ग्रन्थ तैयार हुए | इस ढंग से साहित्य का विस्तार हुआ | साहित्य जितना भी बना है, जीव चेतना से अधिक जीने के अलावा और कोई उपलब्धि नहीं हुई | जीव चेतना में जीते हुये जीवों से अच्छा जीना बन गया |

मानव विधिवत इस दिशा में काम किया है, सफल हुआ, जीवों से अच्छा जी गये | जीवों का मकान बना नहीं रहता है, बना हुआ मकान को अपनाता है | पुरुषार्थ से मकान बनता है | परमार्थ से ज्ञान बनता है | ज्ञान और श्रमशीलता के संयुक्त रूप में मानव समाधान, समृद्धि सम्पन्न होकर जीना बनता है | समाधान, समृद्धिपूर्वक जीना ही अखण्ड समाज का आधार है | अखण्ड समाज के बिना सार्वभौम व्यवस्था बनता ही नहीं | सार्वभौम व्यवस्था के बिना मानवीयता का प्रमाण सहज परंपरा होता नहीं | हम प्राकृतिक विधि से सह-अस्तित्व में रहते हुए, भूल-भुलैया के क्रम में प्रमाणों से दूर रह गये हैं | दिखावा, छलावा; दिखावा के साथ छलावा बनता ही है | छलावा के साथ सारे विरोध सम्पन्न होते हैं | दिखावा नहीं होगा, तब प्राकृतिक ही होगा, वास्तविक होगा | वास्तविकताएं न्याय, धर्म, सत्य ही हैं | न्याय, धर्म सत्यपूर्वक जीना ही मानव का वैभव है | इस बात पर ज्यादा भरोसा दिलाने के लिए विकल्प का प्रस्तुति है | विकल्प विधि से ही हम तीनों प्रमाणों को प्रमाणित कर सकते हैं | सुख, शांति, संतोष आनंद पूर्वक जी सकते हैं | अखण्ड समाज का मतलब सुख, शांति, संतोष, आनंद ही है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)